

कलारंग/ रवींद्र त्रिपाठी

रजा की कलायात्रा के पड़ाव

दिल्ली की सिविल सेवा अधिकारी संस्थान की कला दीर्घा में लगी सैयद हैदर रजा की आरंभिक कलाकृतियों के प्रिंट्स की प्रदर्शनी कला प्रेमियों से लेकर कला अध्येताओं तक के लिए जरूरी संदर्भ है। मूर्तिशिल्पी कलाकर श्रीकांत पांडे ने इसे संयोजित किया है। इन कलाकृतियों (दरअसल उनके डिजिटल प्रिंट) को देखते हुए यह महसूस कर सकते हैं कि रजा अपनी कलायात्रा के किस पड़ाव पर क्या सोच या कर रहे थे और किस पगडंडी पर इस ऊहापोह में थे कि किधर जाना है।

रजा हमारे समय के ही नहीं, आजादी के बाद की भारतीय कला के प्रस्थान बिंदुओं में से एक हैं। इस प्रदर्शनी में उनके नए काम शामिल नहीं हैं और यही इसकी खासियत है। यहां हम उन रजा को देखते हैं जो अपने आरंभिक दौर में हैं और अपने खास मुहावरे को पाने की प्रक्रिया में हैं। अपने प्रारंभ के दिनों में हर कलाकार कई तरह के प्रयोगों से गुजरता है और रजा भी इसके अपवाद नहीं हैं। बिंदु पर तो वे बाद में केंद्रित हुए पर अपने आरंभिक दौर में उन्होंने कई तरह के लैंडस्केप बनाए, कई तरह के रंगों से खेले।

प्रिंट्स की इस प्रदर्शनी में हम उन सैयद हैदर रजा को पाते हैं जिसकी कलायात्रा कई तरह के दृश्यों को देखते-बनाते गुजरी है। आज हम जिस रजा को देखते हैं, उसकी कलायात्रा में कौन से मोड़ आए- इसका साक्ष्य हम यहां पाते हैं। बीसवीं सदी के पांचवे-छठे दशक में उनका कलात्मक आत्म संघर्ष कैसा था- इसको देखना जानना भी एक विशिष्ट किस्म का अनुभव होता है। रजा के बारे में यह बात जोर देकर रेखांकित की जानी चाहिए कि अपनी भारतीय विशिष्टता की मुकम्मल पहचान उन्होंने पेरिस में जाकर की। शायद यह इस बात का भी संकेत है कि यह कतई जरूरी नहीं है कि कोई कलाकार विदेश में रहकर विदेशी ही बना रह जाए। बल्कि ठीक इसका उल्टा भी हो सकता है यानी दूसरे देश में

रहते हुए भी आप अपने देश की सृजनात्मकता से बेहतर जुड़ सकते हैं।

दूसरी ओर ललित कला अकादेमी की दीर्घा में 'स्प्रिंग स्प्लैश' नाम से अठारह कलाकारों की प्रदर्शनी समकालीन भारतीय कला में विविधताओं की तरफ संकेत करती है। इस समूह प्रदर्शनी में जो कलाकार शामिल हैं, वे हैं- आरती झावेरी, अनिता त्रेहन, दीपक कुमार अंबुज, मृण्मय बरूआ, मणीश कुमार राव, मोती झरोटिया, एमएस रावत, नंदिता रिची, पंकज मानव, प्रिंस चांद, शुभिका लाल, टीए सत्यपाल, सोनाली अरोड़ा, सुखदेव सिंह, सुषमा यादव, वंदना सहगल, विकास खजूरिया और विंसेंट फिलिप। इस समूह प्रदर्शनी का संयोजन राजन पुरोहित ने किया है।

प्रदर्शनी में शामिल कलाकारों को किसी एक स्कूल या धराने का नहीं कहा जाना चाहिए।



उनका शैलियां भी अलग-अलग हैं। कोई आकृतिमूलक है तो कोई अमूर्तन का कलाकार। कुछ यथार्थवादी हैं तो कोई फैंटेसी के मुहावरे को अपनाए हुए हैं। पर जो सामान्य बात है वह यह कि हर कलाकार अपने भीतर एक अलग तरह की ऊर्जा और कल्पनाशीलता समेटे हुए है। कई तरह के फॉर्म यानी रूप यहां हैं और रूपाकारों की इस विविधता को देखना इस एहसास से भी भरता है कि मौजूदा कला परिदृश्य में कई तरह की संभावनाएं हैं। एक कलाकृति या कई कलाकृतियां- जितना दिखाती हैं, उससे अधिक इसका संकेत देती हैं कि अभी बहुत कुछ अभिव्यक्त किया जाना बाकी है।